॥ ओ३म् ॥

सन्ध्या

गायत्रीमन्त्रः

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

तूने हमें उत्पन्न किया, पालन कर रहा है तू
तुझसे ही पाते प्राण हम दुःखियों के कष्ट हरता है तू
तेरा महान तेज है छाया हुआ सभी स्थान
सृष्टि की वस्तु-वस्तु में तू हो रहा है विद्यमान
तेरा ही धरते ध्यान हम माँगते तेरी दया
ईश्वर हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर चला

अथाचमनमन्त्रः

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शंयोरभिस्रवन्तु नः ॥१॥

सर्वव्यापक और सर्वप्रकाशक परमेश्वर मनोवांछित सुख और पूर्णानन्द की प्राप्ति के लिए हमको कल्याणकारी हो और हमपर सुख की सब ओर से सर्वथा वृष्टि करें ॥१॥

इन्द्रियस्पर्शमन्त्राः

ओ३म् वाक् वाक् । ओं प्राणः प्राणः । ओं चक्षुः चक्षुः । ओं श्रोत्रम् श्रोत्रम् । ओं नाभिः । ओं हृदयम् । ओं कण्ठः । ओं शिरः । ओं बाहुभ्यां यशोबलम् । ओं करतलकरपृष्ठे ॥२॥

हे अन्तर्यामिन्, मैं आपके सम्मुख प्रार्थना करता हूं कि मैं जान-बूझकर अपनी (पांच) ज्ञान तथा (पांच) कर्म इन्द्रियों से, अर्थात् वाक्, प्राण, चक्षु, श्रोत्र, हृदय, कण्ठ, शिर, बाहु, करतल और करपृष्ठ आदि से कदापि पाप न करूं, ऐसी कृपा करो ॥२॥

SANDHYA

Gaayatree Mantra

Om bhoorbhuvah svah. Tatsavitur varaynyam bhargo dayvasya dheemahi. Dhiyo yo nah prachodayaat.

Eeshwar is cause of our existence. He ever keeps all his devotees, deserving final emancipation and striving for it, aloof from all evil and gives them their desired bliss in this very earthly life. He is abode of all. We should entertain Him in our souls with the utmost love and devotion. He is the creator of the whole universe and the bestower of power and riches upon His devotees. He is the illuminator of the souls of all and imparter of all bliss. He is most acceptable, pure inteligence. May He always safeguard our intellectual faculties from all evil and lead us to do only what is good.

Aachmanam

Om shanno dayveerabhishtaye aapo bhavantu peetayay. Sham yorabhisravantu nah.

May the gracious, radiant and omnipresent Om, for achievemnt of our desired happiness and perfect bliss, shower His blessings on us from all sides.

Indriyasparsha

Om vaak vaak. Om praanah praanah. Om chakshuh chakshuh. Om shrotram shrotram. Om naabhih. Om hridayum. Om kanthah. Om shirah. Om baahoobhyaam yashobalam. Om kartala karprishthay.

Lord! I pray for vitality and glory to my organs of speech and breath, to my eyes and ears, to my naval and my heart, to my throat, head and arms, to my palms and the back of my hands.

मार्जनमन्त्राः

ओ३म् भूः पुनातु शिरसि । ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः । ओं स्वः पुनातु कण्ठे । ओं महः पुनातु हृदये । ओं जनः पुनातु नाभ्याम् । ओं तपः पुनातु पादयोः । ओं सत्यं पुनातु पुनः शिरसि । ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र ॥३॥

हे दयानिधे ! मैं निर्बल हूं, अतएव आपकी शरण हूं, सो आप ही इन इन्द्रियों, अर्थात् शिर, नेत्र, कण्ठ, हृदय, नाभि, पांव आदि को पवित्र करके बलवान् और यशस्वी कीजिए।

प्राणायाममन्त्राः

ओ३म् भूः । ओं भुवः । ओं स्वः । ओं महः । ओं जनः । ओं तपः । ओं सत्यम् ॥४॥

प्राणस्वरूप, प्राण से प्यारा, दुःख दूर करनेहारा, सर्वव्यापक, आनन्दस्वरूप सबसे बड़ा, सबका (जनक) पिता, दुष्टों को सन्तापकारी, सबके जाननेवाला और अविनाशी प्रभु है।

अघमर्षणमन्त्राः

ओ३म् ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत । ततो रात्र्यजायत । ततः समुद्रो अर्णवः॥ १॥

ओं समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत । अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥२॥

ओं सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ॥३॥

परमेश्वर के ज्ञानमय, अनन्त सामर्थ्य से वेद-विद्या और कार्यरूप प्रकृति उत्पन्न हुए। उसी सामर्थ्य से प्रलय और उसी सामर्थ्य से जल के समुद्र उत्पन्न हुए ॥१॥

Marjanam

Om bhooh punaatu shirsi. Om bhuvah punaatu netrayoh. Om svah punaatu kanthe. Om mahah punaatu hrdaye. Om janah punaatu naabhyaam. Om tapah punaatu paadayoh. Om satyam punaatu punah shirsi. Om kham brahma punaatu sarvatra.

May the self-subsistent Lord purify my head! May the all-seeing Lord purify my eyes! May the blissful Lord purify my throat! May the great Lord purify my naval! May the stern and righteous Lord purify my feet! Once again I pray to the truthful God to purify my head. May the all-pervading Lord purify all parts of my body.

Pranayaam

Om bhooh. Om bhuvah. Om svah. Om mahah. Om janah. Om tapah. Om satyam.

The Lord, whom we adore and on whom we meditate, is self-subsistent, all knowing, all bliss, all mighty, maker of all things, stern in justice and truthful.

Aghamarshanam

Om ritancha satyanchaabhee dhaattapaso dhyajaayata. Tato raatryajaayata tatah samudro arnavah.
Om samudra darnavaadadhi samvatsaro ajaayata. Aho raatraani vida dhada vishvasya mishato vashee.
Om sooryaa chandra masou dhaataa yathaa poorvamakalpayata. Divancha prithiveen chaantriksha matho svah.

The almighty Om, who is supporting, protecting and controlling the whole universe, creates the world and all physical beings just in the same manner as in the previous cycles of creations, in conformity with the good or evil done by souls in their previous embodied existence.

जगत् को वश में रखनेवाले परमेश्वर ने अपने सहज स्वभाव से जलकोष के पीछे काल के विभाग—वर्ष, दिन और रात्रि—रचे ॥२॥

विधाता ने पहले कल्प जैसे सूर्य, चन्द्र, द्युलोक, पृथ्वीलोक, अन्तरिक्ष और उसमें फिरने वाले सब लोक-लोकान्तर बनाए ॥३॥

मनसा परिक्रमामन्त्राः

ओ३म् प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षिता-दित्या इषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमोरक्षितृ-भ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । यो३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥१॥

हे सर्वज्ञ परमेश्वर ! आप हमारे सम्मुख की ओर विद्यमान हैं, स्वतन्त्र राजा और हमारी रक्षा करने वाले आपने सूर्य को रचा है, जिसकी किरणों द्वारा पृथ्वी पर जीवन आता है। आपके आधिपत्य, रक्षा और जीवनरूपी प्रदान के लिए, प्रभो ! आपको बारम्बार नमस्कार है, जो अज्ञानवश हमसे द्वेष करता है अथवा जिससे हम द्वेष करते हैं, उसे आपके न्यायरूपी सामर्थ्य पर छोड़ देते हैं ॥१॥

ओं दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । यो३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥२॥

हे परमेश्वर ! आप हमारे दक्षिण की ओर व्यापक हैं। आप हमारे राजाधिराज हैं, और ज्ञानियों के द्वारा हमें प्राण प्रदान करते हैं।

Laws of nature, as well as moral and social laws, sun, moon, heaven, earth, space, planetary worlds, day, night, and all other moments are the result of his omnipotence. May we keep this infinite power of His and feel His presence in every place and every moment and keep ourselves away from committing sins.

Manasaa Parikrama

Om praachee digagni radhipati rasito rakshitaa dityaa ishavah. Taybhyo namo dhipati bhyonamo rakshitribhyo nama ishubhyo nama aybhyo astu. Yoasmaan dveshti yam vayam dvishmastam vo jambhe dadhmah.

Continuous progress and advancement is our first aim. May we, like our Lord, be full of true science, unfettered and protectors. May our thoughts be free and sublime, so that we may gain this aim in our life. May we be able to turn even our enemies into our friends with the help of these noble qualities.

Om dakshina digindro dhipatis tirashchiraajee rakshitaa pitara ishvah. Taybhyo namo dhipati bhyonamo rakshitribhyo nama ishubhyo nama aybhyo astu. Yoasmaan dveshti yam vayam dvishmastam vo jambhe dadhmah.

Ability and efficiency are our second object. May we truly be masters of our senses and be able to control crookedness. Let us submit to the scholars spreading true knowledge so that we may achieve our object and even our foes may become our friends.

ओं प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥३॥

हे सौन्दर्य के भण्डार! आप हमारे पृष्ठ की ओर हैं, हमारे महाराज हैं, बड़े-बड़े हड्डीवाले और विषधारी पशुओं से हमारी रक्षा करते हैं।

ओम् उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताऽशनिरिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥४॥

हे पिता! आप हमारे वाम पार्श्व में व्यापक हैं और हमारे परम ऐश्वर्ययुक्त स्वामी हैं, स्वयम्भू और हमारे रक्षक हैं, आप ही बिजली द्वारा हमारी रुधिर-गति की और प्राणों की रक्षा करते हैं।

ओं ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥५॥

हे सर्वव्यापक प्रभो! आप हमारे नीचे की दिशा में विद्यमान हैं। आप हमारे राजा हैं। आप हरे रंगवाले वृक्षों और बेलों द्वारा हमारे प्राणों की रक्षा करते हैं।

Om prateechee dig varuno dhipatih prdaakoo rakshitaannamishvah. Taybhyo namo dhipati bhyonamo rakshitribhyo nama ishubhyo nama aybhyo astu. Yoasmaan dveshti yam vayam dvishmastam vo jambhe dadhmah.

Running away from the worldly desires and pleasures is our next aim. May we be pure and free from all kinds of sins. May we have courage to challenge and fight all sins. Let us earn food by fair means and be friend to all.

Om udeechee diksomo dhipatih swajo rakshitaashanir ishvah. Taybhyo namo dhipati bhyonamo rakshitribhyo nama ishubhyo nama aybhyo astu. Yoasmaan dveshti yam vayam dvishmastam vo jambhe dadhmah.

Sublimations of ideas and thoughts is our fourth aim. May we too, like our Father, be calm, quiet and unperturbed. May we be strong to free ourselves from all illfeelings and vice. Let us submit to Him and accept His award gladly so that we may be pure at heart and never feel inimical to any one.

Om dhruvaa digvishnu radhipatih kalmaa shagreevo rakshitaa veerudha ishavah. Taybhyo namo dhipati bhyonamo rakshitribhyo nama ishubhyo nama aybhyo astu. Yoasmaan dveshti yam vayam dvishmastam vo jambhe dadhmah.

Mental stability is our fifth cardinal point. May we, like the Almighty, be pious and feel our own self in every creature. May we too know good deeds and righteous paths and advise others to follow them likewise. Let us benefit others, as the trees and plants do, and be affectionate to all.

ओम् ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥६॥

हे महान् प्रभो ! आप ऊपर लोकों में व्यापक, पवित्रात्मा हमारे स्वामी और रक्षक हैं। आप वर्षा करके हमारी कृषि को सींचते हैं जिससे हमारा जीवन होता है।

उपस्थानमन्त्राः

ओ३म् उद्वयन्तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥१॥

हे प्रभो ! हम आपको जानते हैं कि आप अज्ञान-अंधकार के परे, सुखस्वरूप, प्रलय के पश्चात् रहनेवाले, दिव्य गुणों के साथ सर्वत्र विद्यमान देव और हमको जन्म देनेवाले हैं, सो हम आपके उत्तम ज्योतिस्वरूप को प्राप्त हों ॥१॥

ओम् उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥२॥

हे जगदीश्वर ! जो आप सकल ऐश्वर्य के उत्पादक, सर्वज्ञ, जीवात्मा के प्रकाशक हैं, आपकी महिमा सबको दिखाने के लिए संसार के पदार्थ पताका का काम देते हैं। जिस प्रकार झंडियाँ मार्ग दिखलाती हैं उसी प्रकार सबको स्वाभाविक वस्तुएं और सृष्टि-नियम परमेश्वर की प्रतीति कराते हैं ॥२॥

Om oordhvaa dig brihaspati radhipatih shvitro rakshitaa varshamishavah. Taybhyo namo dhipati bhyonamo rakshitribhyo nama ishubhyo nama aybhyo astu. Yoasmaan dveshti yam vayam dvishmastam vo jambhe dadhmah.

Our sixth and last object is to attain spiritual supremacy. May we be superiors to others in knowledge and deeds. May we be mentally pure, energetic, honest and true so that we can attain the loftiest bliss. Let us ascend to the highest like clouds and be benevolent to all those who are poor and suffering and shower pleasure, peace and prosperity to them so that they love us and we love them.

Upasthaanam

Om udvayam tama saspari svah pashyant uttaram. Devam devatraa sooryamaganma jyotiruttamam.

May we realize and secure communion with the Supreme Self, devoid of all darkness, full of all bliss, survivor after universal dissolution, the Illuminator of all that is luminous, the Soul of the universe and the best effulgence.

Om udu tyam jaatvedasam devam vahanti ketavah. Drishe vishvaaya sooryam.

God is the revealer of the Vaidic knowledge, the fountain of all light, the maker of all things. Cosmic phenomena and the Vedas, like sign posts, point to Him. On this Lord we meditate for knowledge of the universe.

ओं चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षꣳ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा ॥३॥

हे स्वामिन् ! यद्यपि इस संसार के पदार्थ आपको दर्शाते हैं, परन्तु आप अद्भुत और विचित्र हैं, आप दिव्य पदार्थों के बल हैं, सूर्य, चन्द्र और अग्नि के चक्षु अथवा प्रकाशक हैं। भूमि, आकाश और तदन्तर्गत लोक सब आपके सामर्थ्य में हैं। आप चर-अचर जगत् के उत्पादक और अन्तर्यामी हैं। हे प्रभो ! हम ऐसे बलवान् हों कि सदैव मन, वाणी और कर्म से सत्य को ग्रहण करें ॥३॥

ओं तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥४॥

हे सबके चक्षु ! आप अनादिकाल से विद्वानों और संसार के हितार्थ शुद्ध वर्तमान हैं। प्रभो ! हम आपको सौ वर्ष सुनें। आपके नाम का सौ वर्ष ध्यान करें, सौ वर्ष की आयु-भर पराधीन न हों और यदि योगाभ्यास से सौ वर्ष से भी अधिक हों तो इसी प्रकार विचरें ॥४॥

8

Om chitram devaa naamudgaada neekam chakshur mitrasya varunasyaagneh Aapraa dyaavaa prthivee antarikshaguang soorya aatmaa jagatas tasthu shashch svaaha.

May we have the vision of the Lord, who is the soul of the entire universe and is pervading all worldly objects and planets and impels them all. He helps those who are free from all kinds of jealousy and hatred, are treading the path of righteousness and are ever progressing. He is ever-shining in the hearts of the enlightened who possess devine qualities.

Om tat chakshur devahitam purustaa chhukra muchcharat. Pashyem shardah shatam jeevema sharadah shatam shranuyaam sharadah shatam prabravaam sharadah shatamadeenah syaama sharadah shatam bhooyashch shardah shataat.

The omnipotent Om, who is benefactor of righteous and learned persons and observing all at every moment, was pious even before the creation. He is and will remain omnipresent, omnicient, and omnipotent even after annihilation of the world. May we see Him, hear Him and His virtues, and pray to Him only to live in this world for hundred years and even more without suffering any humiliation or being dependent on any one.

गायत्री मन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

हे प्राणस्वरूप, दुःखहर्ता और सर्वव्यापक, आनन्द के देनेवाले प्रभो! जो आप सर्वज्ञ और सकल जगत् के उत्पादक हैं, हम आपके उस पूजनीयतम, पापनाशक स्वरूप तेज का ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियों को प्रकाशित करता है। पिता! आपसे हमारी बुद्धि कदापि विमुख न हो। आप हमारी बुद्धियों में सदैव प्रकाशित रहें और हमारी बुद्धियों को सत्कर्मों में प्रेरित करें, ऐसी प्रार्थना है।

समर्पणम्

हे ईश्वर दयानिधे! भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः॥

हे ईश्वर दयानिधे! आपकी कृपा से जो-जो उत्तम काम हम लोग करते हैं वे सब आपके समर्पण हैं जिससे हम लोग आपको प्राप्त हो के धर्म—जो सत्य, न्याय का आचरण करना है, अर्थ—जो धर्म से पदार्थों की प्राप्ति करना है, काम—जो धर्म और अर्थ से इष्ट भोगों का सेवन करना है, मोक्ष—जो सब दुखों से छूटकर सदा आनन्द में रहना है—इन चार पदार्थों की सिद्धि हमको शीघ्र ही प्राप्त हो।

नमस्कारमन्त्रः

ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

नमस्कार है कल्याण के और सुख के स्रोत (चश्मे) को; कल्याण के देनेवाले और सुख के देनेवाले को नमस्कार है; कल्याणस्वरूप और अत्यन्त कल्याणस्वरूप आपको बारम्बार हमारा नमस्कार है।

Gaayatree

Om bhoorbhuvah svah tatsavitur varaynyam bhargo dayvasya dheemahi. Dhiyo yo nah prachodayaat.

Om is the giver of life, the dispeller of miseries and bestower of happiness. We should meditate upon Him, the creator of the universe, the most acceptable and the most knowledgeable God. May He inspire us and guide our intellects to do good.

Offertory

Hay eeshvara dayaanidhay bhavat kripayaa anayna japopaasnaadi karmanaa dharmaartha kaama mokshaanaam sadyah siddhir bhavennah.

Oh Eeshawara! May we, by Thy grace, soon achieve righteousness, good riches, good desires and salvation, by revering and adoring Thee.

Obeisance

Om namah shambhavaaya cha mayobhavaaya cha namah shankaraaya cha mayaskraaya cha namah shivaaya cha shivtaraaya cha.

Our adoration to God, the blissful and the giver of all bliss; to the tranquil and the giver of tranquility; to the all-joy and the giver of joy.

हवनमन्त्राः

अथेश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव । यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥१॥

भावार्थ :—हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता, समग्र ऐश्वर्य युक्त, शुद्ध-स्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर ! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन, और दुःखों को दूर कर दीजिए, और जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं, वह सब हमको प्राप्त कीजिए ।

ओं हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२॥

भावार्थ–जो प्रकाशस्वरूप है, और जिसने प्रकाश करने वाले सूर्य चन्द्रादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किये हैं, जो उत्पन्न हुए जगत् का प्रसिद्ध स्वामी एक ही चेतन स्वरूप था, जो सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व वर्तमान था, वह इस भूमि और सूर्यादि को धारण कर रहा है । हम लोग उस सुखस्वरूप शुद्ध परमात्मा की अति प्रेम से भक्ति किया करें ।

ओं य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः । यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥३॥

PRAYERS AND EXHORTATIONS

**Om vishwaani dayva savitar duritaani paraasuva,
Yadbhadram tanna aasuva. (1)**

O Lord, God Almighty, creator of universe, and dispenser of true and eternal happiness! We beseach Thee to dispel all our misries, vices and evil propensities, and to bestow upon us what is blessed and good.

**Om hiranya garbhah samavart taagray bhootasya
jaatah patirayka aaseet,
Sadaadhaara prithiveem dyaam utaymaam kasmai
dayvaaya havishaa vidhayma. (2)**

Regulating the faculties of the soul and the mind and leading upright lives, we should, with fervent devotion, adore Him; who is Blissful and Holy, the well-known Self-Effulgent, Creator of the earth and all luminous bodies like the sun, and master of the universe who existed before creation.

**Om ya aatmadaa baladaa yasya vishwa upaastay
prashisham yasya dayvaah,
Yasya chhaaya amritam yasya mrityuh kasmai
dayvaaya havishaa vidhayma. (3)**

भावार्थ :—जो आत्मज्ञान का दाता, शरीर, आत्मा और समाज के बल का देने वाला है, जिसकी सब विद्वान् लोग उपासना करते हैं और जिसके प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन, न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं, जिसका आश्रय ही मोक्ष सुखदायक है, जिसका न मानना अर्थात् भक्ति न करना ही मृत्यु आदि दुःख का हेतु है, हम लोग उस सुखस्वरूप सकल ज्ञान के देने वाले परमात्मा की प्राप्ति के लिए आत्मा और अन्तःकरण से भक्तिविशेष करें अर्थात् उसी की आज्ञा पालन करने में तत्पर रहें।

ओं यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव। य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥४॥

भावार्थ :—जो प्राण वाले और अप्राणिरूप जगत् का अपनी अनन्त महिमा से एक ही विराजमान राजा है, जो इस मनुष्यादि और गौ आदि प्राणियों के शरीर की रचना करता है, हम लोग उस सुखस्वरूप, सकल ऐश्वर्य के देने वाले परमात्मा के लिए अपनी सकल उत्तम सामग्री से विशेष भक्ति करें।

ओं येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः। यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥५॥

भावार्थ :—जिस परमात्मा ने तीक्ष्ण स्वभाव वाले सूर्य और पृथ्वी को धारण किया है, जिस जगदीश्वर ने सुख को धारण किया है, जिस ईश्वर ने दुःख-रहित मोक्ष को धारण किया है, जो आकाश में सब लोक लोकान्तरों को विशेष मानयुक्त, अर्थात् जैसे पक्षी आकाश में उड़ते हैं वैसे सब लोकों का निर्माण करता और भ्रमण कराता है, हम लोग उस सुखदायक कामना करने योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करें।

Let us busy ourselves, heart and soul, in the practical observance in our daily lives of the Comandments of that bliss-imparting God, who giveth to the devout true knowledge of Himself as well of the soul, who blesses us with physical, moral and spiritual strength, whom all the enlightened adore and whose visible and truthful rule in the universe the righteous acknowledge, whose protection provides emancipation and whose indifference causes all kinds of miseries and death.

Om yah praanato nimishato mahitwaeeka
idraajaa jagato babhoova,
Ya eeshay asya dvipadash chatushpadah
kasmai dayvaaya havishaa vidhayma. (4)

Let us offer all the best we have, and devoutly worship that Blissful God, the giver of all wealth, Who in His infinite glory is the One and Sole ruler of all creation - animate and inanimate - bestowing corporal existence on all creatures - bipeds (like men) and quadrupeds (like cow).

Om yayna dyourugraa prithivee cha dridha
yayna swah stabhitam yayna naakah,
Yo antarikshay rajaso vimaanah kasmai
dayvaaya havishaa vidhayma. (5)

Let us adore with all the capacity of our body, mind and soul that Blissful Supreme Being, the Lord of all our desires, by Whom the formidable sun, the earth and other planets are sustained, by Whom the quota of earthly happiness and the enjoyment of final beautitude is maintained, and who creates the different planets and worlds and sets them moving in space, like birds flying in the sky.

ओं प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥६॥

भावार्थ :—हे सब प्रजा के स्वामी परमात्मा आपसे भिन्न दूसरा कोई उन इन सब उत्पन्न हुए जड़-चेतनादिकों का तिरस्कार नहीं करता अर्थात् आप सर्वोपरि हैं। जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले हम लोग आपका आश्रय लें और वाञ्छा करें, वे सब हमारी कामनाएँ सिद्ध हों, जिससे हम धनैश्वर्यों के स्वामी बनें।

ओं स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥७॥

भावार्थ :—हे मनुष्यो ! वह परमात्मा हमारा सहायक, सकल जगत् का उत्पादक सब कार्यों को पूर्ण करने वाला, सम्पूर्ण लोकमात्र नाम, स्थान, जन्मों—को जानता है। जिस सांसारिक सुख-दुःख से रहित नित्य आनन्दयुक्त परमात्मा में मोक्ष को प्राप्त होकर विद्वान् लोग स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं, वही परमात्मा अपना गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है। हम लोग मिलकर सदा उसकी भक्ति किया करें।

ओं अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमउक्तिं विधेम ॥८॥

भावार्थ :—हे स्वप्रकाशक ज्ञानस्वरूप, सब जगत् के प्रकाश करने वाले, सकल सुखदाता परमेश्वर ! आप जिससे सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं, कृपा करके हम लोगों को विज्ञान तथा राज्यादि ऐश्वर्य अच्छे धर्म युक्त मार्ग से प्राप्त कराइये और हमसे कुटिलता-युक्त पापरूप कर्म को दूर कीजिए। इस कारण हम लोग आपकी नम्रतापूर्वक बहुत प्रकार की स्तुति और प्रशंसा सदा किया करें।

Om prajaapatay na twadaytaa nyanyo
vishwaa jaataani paritaa babhoova,
Yatkaa maastay juhu mastanno astu vayam
syaama patayo raeenaam. (6)

O Lord of all creatures, none other than Thou excels all these and other created things. Thou art above all. Thou art Supreme. May Thou fulfil all our cherished desires and may we possess bounteous wealth and other material things of the world.

Om sa no bandhur janitaa sa vidhaataa
dhaamaani veda bhuvnaani vishwaa,
Yatra dayvaa amritamaanashaa naastriteeyay
dhaamanna dhyaee rayanta. (7)

To us He is kind and loving like a sincere kinsman. He is the Producer and Dispenser of the entire universe. He knows all the worlds and the name, place and source of every thing. He is the source of final beautitude, infinitely above the vanishing joys of the world and untouched by its shortcomings and miseries. In Him do the enlightened attain final emancipation, and move about freely in space with absolutely no hinderance of any kind in having free access to all worlds, all places and every thing according to their wishes. We should always together worship Him.

Om agnay naya supathaa raayay asmaan
vishwaani dayva vayunaani vidwaan,
Yuyodhyasa majjuhuraan mayno bhooyishthaan
tay nama uktim vidhayma. (8)

O Self-Effulgent, Omnicient Lord, cast out from us all debasing and sinful desires and habits and lead us, by the path of righteousness, to attainment of all true knowledge and worldly riches. For this we offer unto Thee profound obeisance and praise.

आचमनमन्त्राः

निम्नलिखित मन्त्रों से तीन आचमन करें—

१—ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।

२—ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा।

३—ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।

हे भगवन्! यह सुखप्रद जल सब का आश्रयभूत है, यह कथन शुभ हो।

हे अमर परब्रह्म! तू जगत् को सर्वथा धारण करने वाला है।

हे परमेश्वर! सत्यकर्म, यश, सम्पत्ति और ऐश्वर्य मुझ में विराजमान हों।

इन्द्रियस्पर्शमन्त्राः

अब बाईं अंजलि में जल भरकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़ते हुए दाहिने हाथ से अंगस्पर्श करें—

ओं वाङ्म आस्येऽस्तु (मुख को)। ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु (नाक को)। ओम् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु (आंखों को)। ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु (कानों को)। ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु (बांहों को)। ओम् ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु (जांघों को)। ओम् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु (सब अंगों पर जल छिड़कें)।

मेरे मुख में बोलने की शक्ति रहे ॥१॥ मेरे दोनों नथुनों में श्वासशक्ति रहे ॥२॥ मेरी दोनों आंखों में दृष्टि रहे ॥३॥ मेरे कानों में श्रवणशक्ति रहे ॥४॥ मेरी भुजाओं में बल हो ॥५॥ मेरी जंघाओं में बल हो ॥६॥ परमेश्वर! मेरे अंग रोग-रहित और पुष्ट हों, ये सदा शरीर के साथ रहें ॥७॥

THE HAVAN (AGNIHOTRAM)
ACHAMANAM (SIPPING OF WATER)

[With each of the following three mantraahs take a little water in your right hand and sip it.]

Om amrito pastarana masee swahaa.
Om amritaa pidhaana masee swahaa.
Om satyam yashah shreermayee shreeh shrayataam swahaa.

O Imortal Lord! Thou art my sustainer and shelter. May I, living under your protection, attain truth, good name, worldly prosperity and spiritual advancement for my own as well as others' good: May this prayer come true!

ANGASPARSHA (Touching of parts of body)

[Now clean your right hand and take a little water in your left hand. With middle and ring fingers of right hand touch the water and then your parts of the body, first right and then left side.]

Om waangma aasiay astu.	the mouth
Om nasormay praano astu.	the nose
Om akshanormay chakshur astu.	the eyes
Om karnyormay shrotram astu.	the ears
Om baahvormay balam astu.	the shoulders
Om oorvormay ojo astu.	the knees

Om arishtaani may angaani tanoostanvaa may sah santu.

sprinkle the remaining water on all your body.

O Almighty God, by Thy grace may my mouth be blessed with power of speach, my nostrils with healthy vital air, my eyes with perfect vision, my ears with power of audition, my arms with strength, my legs with vitality. And may all other parts and limbs of my body be safe from harm, rendering them healthy and sound for life's work.

अब समिधा-चयन वेदी में करें, पुनः—

ओं भूर्भुवः स्वः ।

ईश्वर-कृपा से उस अग्नि को प्रदीप्त करता हुआ मैं भूमि, अन्तरिक्ष और द्यौ लोक को अपने अनुकूल बनाता हूं ।

इस मन्त्र का उच्चारण करके ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य के घर से अग्नि ला, अथवा घृत का दीपक जला, उससे कपूर में लगा, किसी एक पात्र में धर, उसमें छोटी-छोटी लकड़ी लगाके यजमान या पुरोहित उस पात्र को दोनों हाथों से उठा, यदि गर्म हो तो चिमटे से पकड़कर अगले मन्त्र से अग्न्याधान करे—

ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा । तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ॥१॥

परमेश्वर सबका आधार, सब में व्यापक, सुखस्वरूप है । वह परमेश्वर संसार के लिए बृहत्त्व के कारण आकाश के समान और फैलाव से पृथ्वी के समान है । हे भगवन् ! यह पृथ्वी, जो देवताओं का यज्ञ स्थान है, उसकी पीठ पर हव्य खाने हारे भौतिक अग्नि को खाने योग्य अन्न की प्राप्ति के लिए मैं स्थापित करता हूँ ।

इस मन्त्र से वेदी के बीच में अग्नि को धर, उसपर छोटे-छोटे काष्ठ और थोड़ा कपूर धर, अगला मन्त्र पढ़कर पंखे से अग्नि को प्रदीप्त करें—

ओम् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते संसृजेथामयं च । अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥२॥

हे विद्वान् यजमान ! तू उत्तम रीति से चैतन्य को प्राप्त हो और प्रत्यक्ष जागृत हो । हे यजमान ! तू और यह, दोनों इष्ट अर्थात् वेदाध्ययन आतिथ्य आदि और पूर्त-प्याऊ बगीचा, धर्मशाला आदि कर्मों से संसर्ग करो । हे सब विद्वान् जनो ! तुम सब इस उत्तम समाज में अधिकार पूर्वक बैठो ।

AGNYAADHAANAM

[Putting fire in sacrificial receptacle - Havan Kund]

Om bhuh bhuvah swah.

O Lord Thou art the protector and life breath of all, dispeller of tribulations, blissful and imparter of true bliss.

[With this mantra ignite the camphor, and with the next mantra place it in the sacrificial receptacle (Havan Kund), then place fire wood (Samidhaa) on it.]

Om bhuh bhuvah swardyou riv bhoomnaa prithiveeva varimnaa tasyaastay prithivi dayva yajni prishthay agnimannaa damanna diyaayaa dadhay.

O life-breath of all, dispeller of miseries and imparter of bliss! I place at the bed of the receptacle the sacrificial fire. This receptacle is in direct contact with the earth on which the virtuous perform sacrifices and do good deeds. I pray that I may be blessed with all kinds of food. May my heart be kind, generous and vast like the heavens and full of endurance like the earth.

Om ud budhyaswa agnay pratijaagrahi twamishtaa poortay sam srijay thaamayancha, asmint sadhasthay adhyuttarasmin vishway dayvaa yajmaanashch seedata.

O Agni, blaze well and rise high. May this performer, with your help, be able to accomplish all sacrificial duties and other works of public utility. May this performer and other enlightened people take their seats on this holy stage, where no distinction is made between the high and the low.

जब अग्नि समिधाओं में प्रविष्ट होने लगे, तब चन्दन की अथवा पलाश आदि की तीन लकड़ी आठ अंगुल की घृत में डुबो, उनमें से नीचे लिखे एक-एक मन्त्र से एक-एक समिधा को अग्नि में डाले। वे मन्त्र ये हैं—

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्च-सेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जात-वेदसे—इदन्न मम ॥१॥

हे सब पदार्थों में विद्यमान परमेश्वर! यह मेरा आत्मा तेरे लिए ईंधन रूप है। इससे मुझमें तू प्रकाशित हो और यह अवश्य ही बढ़े, हमको तू बढ़ा और पुत्र-पौत्र, सेवक आदि प्रजा से, गौ आदि पशुओं से, वेद विद्या के तेज से और भोग्य, धान्य घृत दुग्ध आदि अन्न से समृद्ध कर यह सुन्दर आहुति है। यह सम्पूर्ण पदार्थों में विद्यमान ज्ञानस्वरूप परमेश्वर के लिए है। यह मेरे लिए नहीं है।

ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा। इदमग्नये—इदन्न मम ॥२॥

इससे और

ओं सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे—इदन्न मम ॥३॥

इस मन्त्र से अर्थात् दोनों मन्त्रों से दूसरी, और

ईंधन से और घृत से व्यापनशील अग्नि को तुम सब पूजो और चेताओ। इसमें हवन सामग्री को यथाविधि चढ़ाओ। यह सुन्दर आहुति है। यह आत्मसमर्पण परमेश्वर के लिए है। यह मेरे लिए नहीं है।

अच्छे प्रकार प्रदीप्त संशोधक पदार्थों में विद्यमान अग्नि के लिए तपाया हुआ घृत तुम चढ़ाओ। यह सुन्दर आहुति है। यह सम्पूर्ण पदार्थों में विद्यमान परमेश्वर के लिए है, मेरे लिए नहीं है।

[When the fire starts spreading, three sticks measuring about 6 inches should be dipped in ghee (melted butter) and put one by one in the fire, as below.]

Om ayanta idhma aatmaa jaatvay dastay nay dhyasva vardhasva chaydha vardhaya chaasmaan prajayaa pashu bhir brahma varchasay naannaa dyayna samay dhaya swaahaa. Idam agnayay jaata vaydasay idanna mum.

- Put first stick now.

O Almighty God, in whom Vaydaas have origin and who pervades all the elements, this my soul is Thy fuel, just as this wood is the soul of the fire. O Agni! blaze intensely with this, advance and bless us with wealth, divine glory, plentiful food and spiritual advancement. This oblation is for all-pervading Agni and not for myself.

Om samidhaagnim duvasyat ghri tayeer bodhaya taa tithim, aasmin havyaa juhotana swaahaa. Idam agnayay idanna mum.

Om su samidhaaya sho chishay ghritam teevram juhotana, agnayay jaatvay dasay swaahaa. Idam agnayay jaata vaydasay idanna mum.

- Put the second stick.

O performer, set the sacrificial fire ablaze with good fragrant fuel and pure ghee with reverence, in the same way as you would serve an unexpected respectable guest. This oblation is for Agni which pervades everything, not for myself.

ओं तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा। इदमग्नयेऽङ्गिरसे—इदन्न मम ॥४॥

इस मन्त्र से तीसरी समिधा की आहुति देवें।

इस व्यापनशील अग्नि को ईंधनों से और घृत से हम बढ़ाते हैं। यह जो अत्यन्त संयोजक है, यह बहुत प्रज्वलित हो, यह सुन्दर आहुति है। यह परमेश्वर के लिए है, मेरे लिये नहीं।

इन मन्त्रों से समिधादान करके होम का शाकल्य जोकि यथावत् विधि से बनाया हो सुवर्ण, चांदी, कांसा आदि धातु के पात्र अथवा काष्ठपात्र में वेदी के पास सुरक्षित धरें, पश्चात् उपरिलिखित घृतादि जो कि उष्ण कर छानकर पूर्वोक्त सुगन्ध्यादि पदार्थ मिलाकर पात्रों में रखा हो, घृत व अन्य मनोहर भोगादि जो कुछ सामग्री हो उसमें से कम से कम ६ माशा-भर, अधिक से अधिक छटांक-भर, की आहुति देवें, यही आहुति का परिमाण है। उस घृत में से चमचा (जिसमें कि ६ माशा ही घृत आवे ऐसा बनाया हो) भरके नीचे लिखे मन्त्र को पांच बार पढ़कर पांच आहुति देवें—

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे—इदन्न मम ॥१॥

हे सब पदार्थों में विद्यमान परमेश्वर! यह मेरी आत्मा तेरे लिए ईंधन रूप है। इससे मुझमें तू प्रकाशित हो और अवश्य ही बढ़ और हमको तू बढ़ा और पुत्र पौत्र, सेवक आदि सब प्रजा से गो आदि, पशुओं से, वेद विद्या के तेज से और भोग्य धान्य, घृत, दुग्ध आदि अन्न से समृद्ध कर। यह सुन्दर आहुति है। यह परमेश्वर के लिए है, मेरे लिये नहीं है।

Om tantwaa samid bhirangiro ghritayna var dhayaa masee, bri hachho cha yavish taya swaahaa. Idam agnayay angirasay idanna mum.

- Put the third stick in.

O brightly lit Agni! We feed unto you firewood and ghee to enable you to grow further. You are most helpful in joining and disjoining material objects and setting them into motion. This oblation is for Agni, the motive power, and not for myself.

[The next mantra should be recited 5 times and each time one spoon of ghee should be poured into the fire.]

Om ayanta idhma aatmaa jaatvay dastay nay dhyasva vardhasva chaydha vardhaya chaasmaan prajayaa pashu bhir brahma varchasay naanna dyayna samay dhaya swaahaa. Idam agnayay jaata vaydasay idanna mum.

O Almighty God, in whom Vaydaas have origin and who pervades all the elements, this my soul is Thy fuel, just as this wood is the soul of the fire. O Agni! blaze intensely with this, advance and bless us with wealth, divine glory, plentiful food and spiritual advancement. This oblation is for all-pervading Agni and not for myself.

तत्पश्चात् अंजलि में जल लेके, वेदी के पूर्व दिशा आदि चारों ओर छिड़कावें। इसके मन्त्र ये हैं—

ओम् अदितेऽनुमन्यस्व ॥ इस मंत्र से पूर्व की ओर,

ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व ॥ इससे पश्चिम,

ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व ॥ इससे उत्तर, और

ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।

इस मन्त्र से वेदी के चारों ओर जल छिड़कावें।

हे अखण्ड परमेश्वर! आप प्रसन्न होकर हमें अनुकूल मति दीजिये।

हे हितकारी बुद्धि वाले ईश्वर! आप हमें हितकारिणी मति दीजिये।

हे सब विद्याओं के भण्डार जगदीश्वर! आप प्रसन्न होकर हमें प्रसन्नता दीजिये।

हे प्रकाशमय, सबके चलाने हारे परमेश्वर! इस यज्ञ वा उत्तम कर्म को आगे बढ़ा और यज्ञ के रक्षक यजमान को ऐश्वर्य की वृद्धि के लिये आगे बढ़ा। अद्भुत स्वभाव, विद्याओं का आधार, बुद्धि शुद्ध करने हारा परमेश्वर हमारी बुद्धि को शुद्ध करे। विद्या का स्वामी परमात्मा हमारी विद्या को मधुर करे।

इसके पश्चात् सामान्य होमाहुति गर्भाधानादि प्रधान संस्कारों में अवश्य करें। इनमें मुख्य होम के आदि और अन्त में जो आहुति दी जाती हैं उनमें से यज्ञकुण्ड के उत्तर के भाग में जो एक आहुति और यज्ञकुण्ड के दक्षिण भाग में जो एक आहुति देनी होती है उनका नाम 'आघारावाज्याहुति' है और जो कुण्ड के मध्य आहुतियां दी जाती हैं, उनको 'आज्यभागाहुति' कहते हैं। सो घृतपात्र में से स्रुवा को भर, अंगूठा, मध्यमा तथा अनामिका से स्रुवा को पकड़कर—

JALAPROKSHANAM

(Sprinkling of water)

[Take some water in hand and sprinkle as indicated below, outside the Kund]

Om aditay anu manyaswa. - in east

Om anu matay anu manyaswa. - in west

Om saras watya anu manyaswa. - in north

Om dayva savitah prasuva yajnyam prasuva yajna patim bhagaaya, divyo gandharvah kay tapooh kaytannah punaatu vaachaspatir vaacham nah swa datu.

- in all sides starting with south going counterclockwise.

O Unimpairable, Favourable, all-knowledge, Almighty God! Accede to our request. O Self Effulgent, creator of the universe, Divine source of the Vaydaas, Purifier of intellect, Protector of speech, Omnicient God! purify our understanding and sweeten our speech.

ओम् अग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम।

इस मन्त्र से वेदी के उत्तर भाग अग्नि में,

ओं सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय—इदन्न मम।

इस मन्त्र से वेदी के दक्षिण भाग में प्रज्वलित समिधा पर आहुति देनी। तत्पश्चात्—

सर्वेश्वर परमेश्वर के लिये यह आहुति है, मेरे लिये नहीं।

सोम्य स्वभाव परमेश्वर के लिये यह सुन्दर आहुति है, मेरे लिये नहीं है।

ओं प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदन्न मम।

ओम् इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय इदन्न मम।

इन दो मन्त्रों से वेदी के मध्य में दो आहुतियां देनी।

प्रजापालक ईश्वर के लिये यह आहुति है, मेरे लिए नहीं।

परम ऐश्वर्य वाले परमात्मा के लिए यह आहुति है, मेरे लिए नहीं।

व्याहृति की चार आहुति देवें—

ओं भूरग्नये स्वाहा। इदमग्नये—इदन्न मम ॥१॥

ओं भुवर्वायवे स्वाहा। इदं वायवे—इदन्न मम॥२॥

ओं स्वरादित्याय स्वाहा। इदमादित्याय—इदन्न मम ॥३॥

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा। इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः—इदन्न मम ॥४॥

सर्वाधार अग्नि के लिए, दुःखनाशक वायु के समान व्यापक के लिए, सुख स्वरूप, प्रकाश स्वरूप के लिए इस सब गुणों से युक्त प्रभु के लिए उसकी प्रीति का पात्र बनने के भाव से मैं आहुति देता हूँ।

[Now pour two oblations of ghee as below:]

Om agnayay swaahaa. Idam agnayay idanna mum.
- in the northern side

Om somaaya swaahaa. Idam somaaya idanna mum.
- in the southern side

O God! I offer these oblations to You, All knowledge, Lord Supreme, Just and Peaceful. Whatever I offer is for You only. Nothing is for myself.

AAJYABHAAGAAHUTI

[With the following mantraas pour two oblations in the center of the Kund.]

Om prajaa patayay swaahaa. Idam prajaa patayay idanna mum.
Om Indraaya swaahaa. Idam Indraaya idanna mum.

I offer these oblations to the nourisher of all His children-the Master of all power. Father! what I offer is for You only and nothing for myself.

VYAAHRITYAAHUTI

Om bhooragnayay swaahaa. Idam agnayay idanna mum.
Om bhuvarvaayvay swaahaa. Idam vaayvay idanna mum.
Om swaraadityaaya swaahaa. Idam aadityaaya idanna mum.
Om bhoorbhuvah swaragni vaayvaadityay bhyah swaahaa. Idam agni vaayvaadityay bhyah idanna mum.

O God! You are Almighty, Dispeller of miseries, Dynamic, Blissful, Imperishable, Eternal. Whatever I offer is for fire, air, and sun and for them only. Nothing is for me. I wish that they be agreeable to me.

ये चार घी की आहुति देकर स्विष्टकृत् होमाहुति एक ही दें यह घी अथवा भात की देनी चाहिये। उसका मन्त्र—

ओं यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनांकामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते—इदन्न मम॥

मैं जो कुछ इस कर्म के सम्बन्ध में विधि से अधिक कर चुका हूं या इससे कम कर बैठा हूँ। यज्ञ को पूर्ण करनेवाला भौतिक और आत्मिक अग्नि उसे जाने, मेरा वह अच्छे प्रकार यज्ञ किया हुआ अच्छे प्रकार होम हुआ करे। अग्नि के लिए जो यज्ञ को ठीक बनाने वाला, आहुति को ठीक करने वाला, सारी पाप प्रतिबन्धक रूप आहुतियों का सब कामनाओं को सफल करने वाला है, यह आहुति दे रहा हूँ।

हे अग्ने! हमारी सारी, कामनाओं को परिपूर्ण करो। यह मेरी वाणी सत्य हो। यह स्विष्टकृत अग्नि के लिए समर्पण कर चुका हूँ इस पर मेरा कोई स्वत्व नहीं।

इससे एक आहुति दे करके प्राजापत्याहुति नीचे लिखे मन्त्र को मन में बोलकर देनी चाहिये।

ओं प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये—इदन्न मम॥

यह आहुति प्रजापति परमात्मा के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओं भूर्भुवः स्वः। अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय—इदन्न मम॥१॥

हे अग्ने! तू जीवन की रक्षा करता है, तू हमारे लिए बल और अन्नादि को प्राप्त करा और हमारी (दुच्छुनां) दुःखदायी पीड़ा को दूर कर।

SVISHTAKRIDAHUTI

[Note: with the following mantra offer an oblation of unsalted or sweet cooked food, or ghee.]

Om yadasya karmano atyareericham yadvaa nyoona mihaakaram. Agnishtat svishtakridvidyaat sarvam svishtam suhutam karotu may. Agnayay svishtakrite suhut hute sarvapraayash chittaahuteenaam kaamaanaam samardhayitray sarvaanah kaamaant samardhaya svaahaa. Idam agnayay svishtkritay idanna mum.

Oh! all-knowing God, fulfiller of all noble desires, You know what I seek. Condone whatever excess or shortcoming there may have been in this yajna. Accept these expiatory oblations reverently made and make the yajna successful. Whatever is offered is for You and nothing is for myself.

PRAJAAPATYAAHUTI

(In the following mantra, the word 'prajaapatayay' should be said in mind)

Om prajaapatayay svaahaa. Idam prajaapatayay idanna mum.

I offer this oblation for the nourisher of all His children. Father! what I offer is for You only, nothing is for myself.

AAJYAAHUTI

Om hboorbhuvah svah. Agna aayoonshi pavasa aa suvorjamisham cha nah. Aaray baadhasva duchhunaam svaahaa. Idam agnayay pavamaanaaya idanna mum.

Oh Supreme Lord, the source of the universe, dispeller of miseries, all bliss, and all knowledge! You purify our lives. Provide us with vitality and food and keep all misfortunes, miseries and calamities away from us. This is my hearty prayer. Whatever I have got is Thine and Thine only. Nothing is mine here.

ओं भूर्भुवः स्वः। अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयं स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय—इदन्न मम ॥२॥

अग्नि सर्वत्र व्याप्त और शोधक है पांचों प्रकार के मनुष्यों में (यज्ञार्थ समरूप रक्खा जाता है।) उस स्तुति के योग्य अग्नि से धनादि चाहते हैं।

ओं भूर्भुवः स्वः। अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे। वर्चः सुवीर्यम्। दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम ॥३॥

हे अग्ने! तू उत्तम कर्म (गति) वाला है, हममें अच्छे बल वाले तेज को प्राप्त करा। मुझमें धन और पोषण को धारण करा।

ओ भूर्भुवः स्वः। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा। इदं प्रजापतये—इदन्न मम ॥४॥

हे सब प्रजा के स्वामी परमात्मन्! आपसे भिन्न दूसरा कोई और इन सब उत्पन्न हुओं को तुच्छ नहीं समझता है। जिस २ पदार्थ की कामना वाले हम आपका आश्रय लेवें, वह पूरी हो जिससे हम धन ऐश्वर्यों के स्वामी होवें।

Om bhoorbhuvah svah. Agnirrishih pavamaanah paanchajanyah purohitah. Tameemahay mahaagayam svaahaa. Idam agnayay pavmaanaaya idanna mum.

The Lord Supreme, Who is dearer than life, watches everyone everywhere and every moment. Who is purifier, impartial and benevolent to all, is our guide. May we be able to achieve Him, the great reverable Father.

Om bhoorbhuvah svah agnay pavasva svapaa asmay varchah suveeryam. Dadhadrayim mayi posham svaahaa. Idam agnayay pavmaanaaya idanna mum.

Oh Lord Supreme! You are dearer to me than my life. You are dispeller of all miseries and doer of good deeds. Purify us; give us splendour and energy. Bless me with all kinds of riches and vigour. This oblation is for you and not for me.

Om bhoorbhuvah svah. Prajaapatay na tvadaytaa nyanyo vishvaa jaataani pari taa babhoova. Yatkaamaastay juhumastanno astu vayam syaama patayo rayeenam svaahaa. Idam prajaapatayay idanna mum.

Oh Lord of all creatures, none other than Thou excells all these and other created things. You are above all. You are Supreme. You fulfil our cherished desires. May we possess bounteous wealth and other material things of the world.

इनसे घृत की चार आहुति देकर निम्नलिखित आठ मन्त्रों से सर्वत्र मंगलकार्यों में आठ आज्याहुति देवें— सामग्री से --

ओं त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळोऽवयासिसीष्ठाः यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदमग्नी-वरुणाभ्याम्—इदन्न मम ॥१॥

हे अग्ने ! दिव्य गुण वाले विद्वान् आप हमारे कर्मों के ज्ञाता हैं, वरुण के अनादर से आप हमको पृथक् रखो जिससे हम यज्ञ करने वालों में श्रेष्ठ हों। आप अत्यन्त प्रकाश और तेज वाले हो, हम से सब द्वेषों (पापों) को दूर करो।

ओं स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि स्वाहा। इदमग्नी-वरुणाभ्याम्—इदन्न मम ॥२॥

हे दिव्य गुण वाले विद्वान् ! आप अपने आगमन से हमारे रक्षक हो और इस प्रातःकाल के यज्ञादि में समीप हों, हमारे आवरण करने वाले पाप को नष्ट करो और सुखदायक यज्ञशेष को स्वीकार करें और आह्वान से युक्त हो—

ओम् इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय। त्वामवस्युरा चके स्वाहा। इदं वरुणाय—इदन्न मम ॥३॥

हे वरुण ! आज मेरे इस स्तुति समूह को आप सुनें और सुखी करें। अपनी रक्षा की इच्छा करता हुआ मैं आपकी स्तुति करता हूँ।

ASHTAAJYAHUTI

Note: Hereafter put samagree also in the fire. (Yajmaana continues oblations of ghee)

Om tvanno agnay varunasya vidvaan devasya haydoav yaasiseeshthaah. Yajishtho vahnitamah shoshuchaano vishvaa dvayshaansi pramu mugdhyasmat svaahaa. Idam agni varunaabhyaam idanna mum.

Oh self Effulgent, omnicient God! grant that we may not dishonor any enlightened scholar. You are most Honorable, best carrier and most effulgent. Drive away all ill feelings from our minds. This oblation is for Agni and not for myself.

Om sa tvanno agnay avamo bhavotee naydishtho asyaa ushaso vyushtou. Ava yakshva no varunam raraano veehee mrideekam suhavo na aydhi svaahaa. Idam agnee varunaabhyaam idanna mum.

Oh Almighty God! protect us with all means of protection. You are nearest to us in this ceremony. Accept this offering. Provide us with the company of the enlightened. This oblation is for Agni and not for myself.

Om imum may varuna shrudhee havmadyaa cha mridaya. Tvaam vasyuráachakay svaahaa. Idam varunaayá idanna mum.

Oh Reverable Father! Listen to my prayer and make me happy today. I need Thy protection and invoke Thee from my heart. This oblation is for Varuna and not for myself.

ओं तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः स्वाहा। इदं वरुणाय—इदन्न मम ॥४॥

हे वरुण ! वेद से स्तुति करता हुआ मैं तुझसे उसी को चाहता हूं जिस (पूर्ण) आयु को यजमान चाहता है । हमारी इच्छा को जान कर उसका अनादर न कर और बहुत स्तुति करने योग्य हमारे जीवन को कम न कर ।

ओं ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा विततता महान्तः तेभिर्नोऽद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा । इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्य : स्वर्केभ्य :— इदन्न मम ॥५॥

हे वरुण ! हे सर्वोत्पादक और व्यापक ईश्वर जो सैंकड़ों और हजारों यज्ञसम्बन्धी बड़े पाश फैले हुए हैं उनसे आप और सब अच्छे पूजनीय विद्वान् हमको छुड़ावें ।

ओम् अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्य-मित्त्वमयासि अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषज ꣳस्वाहा । इदमग्नये अयसे—इदन्न मम॥६॥

हे अग्ने ! तुम सब जगह व्यापक हो, और कुत्सित कर्म करने वालों को पवित्र करने वाले हो। हे अग्ने ! तुम हमारे यज्ञीय मार्गों को सूर्य आदि देवताओं के लिये वहन करते हो, हमको सुख दीजिये ।

Om tattvaa yaami brahmanaa vanda maanast daashaastay yajmaano havirbhih. Ahaydamaano varunayha bodhyuru shansa maa na aayuh pramosheeh svaahaa. Idam Varunaaya idanna mum.

Oh Reverable God! Adoring Thee with these verses, I only wish to achieve You. The performer of this ceremony seeks the same. O highly renowned Father, be kind not to decline our prayer and do not let our lives be wasted. This oblation is for Varuna and not myself.

Om yay tay shatam Varuna yay sahasram yajniyaah paashaa vitataa mahaantah. Tebhirno adya savitota vishnurvishvay munchantu marutah svarkaah svaahaa. Idam varunaaya savitray vishnavay vishvaybhyo dayvaybhyo marudbhyah svarkaybhyah idanna mum.

Oh Creator of the universe and Omnipresent Lord! May Thou and the enlightened scholars, who are saviours of mankind, be gracious to relieve me of the hundreds and thousands of hinderances pertaining to this ceremony, with assitance of the Yajna. Whatever I possess is for You and the learned scholars and nothing for myself.

Om ayaashchaagnay asya nabhishasti paashcha satyamitvamayaasi. Ayaa no yajnam vahaasyayaa no dhayhi bhayshajam svaahaa. Idam agnayay ayasay idanna mum.

Oh self Effulgent Lord! You pervade everything and protect all guiltless beings. Pray ensure successful conclusion of this our sacrifice and provide us with remedial force against diseases, sufferings and sin. Whatever I own is for You, my Lord, and nothing is for myself.

ओम् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा । इदं वरुणायाऽऽदित्याया-दितये च—इदन्न मम ॥७॥

हे वरुण ! आप हमारे उत्तम, मध्यम और निकष्ट बन्धन को दूर कीजिये और फिर हम लोग तुम्हारे व्रत में पाप कर्मों से अलग रहकर मुक्ति सुख के लिये योग्य हों ।

ओं भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ । मा यज्ञꣳहिꣳसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा । इदं जातवेदोभ्याम्—इदन्न मम ॥८॥

हमारे मध्य पाप रहित, समान मन वाले स्त्री पुरुष हों और वे यज्ञ का लोप न करें और यज्ञों के पालक को भी पीड़ा न पहुँचावें और वे हमारे लिये भी कल्याणदायक हों ।

निम्नलिखित मन्त्रों से प्रातःकाल का हवन करे—

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥१॥
ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥२॥
ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥३॥
ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या । जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ॥४॥

(सूर्यः) सकलोत्पादक (ज्योतिः) जिससे प्रकाश किया जाता वा जो स्वयं प्रकाशमान् सर्वावभासक है (ज्योतिः सूर्यः) सर्वावभासक ही सर्वोत्पादक है (स्वाहा) उसी की आज्ञा पालनार्थ सारे संसार के उपकार के लिये यह आहुति देते हैं ।

(सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा) सर्वोत्पादक वर्चस् अर्थात् ज्ञान-स्वरूप दीप्ति वाला सर्वावभासक तदर्थ ही आहुति है । (ज्योतिः सू०) स्वयं प्रकाशमान सर्व जगत्प्रकाशक सूर्य जगदीश्वर है तदाज्ञास्वरूप ही यह आहुति है ।

Om uduttamam varuna paashamasm davaadhamam vi madhyamam shrathaaya. Athaa vayamaaditya vratay tavaanaagaso aditayay syaam svaahaa. Idam varunaaya adityaayaaditayay cha idanna mum.

Oh Reverable God! Loosen all our bonds. May we always remain under discipline and be sinless and free from all bonds. This oblation is for Varuna and Aditya and not for myself.

Om bhavatannah samanasou sachayt saavraypasou. Maa yajnam higvang sishtam maa yajnapatim jaatvaydasou shivou bhavatamadya nah svaahaa. Idam jaatvaydobhyaam idanna mum.

May the enlightened scholars (men and women), possessing knowledge of all created things, be favourable, of one mind and sinless for us. May they never destroy this Yajna and its performers. May they be benevolent for us. This is my prayer. This oblation is for the learned scholar and not for myself.

MORNING SACRIFICE

Om sooryo jyotirjyotih sooryah svaahaa.
Om sooryo varcho jyotirvarchah svaahaa.
Om jyotih sooryah sooryo jyotih svaahaa.
Om sajoordayvayna savitraa sajoor ushasayndra vatyaa. Jushanah sooryovaytu svaahaa.

Truly the Lord supreme, who is impeller, creator and self effulgent, is the supreme light and lustre, as is the lustrous sun in the world. May this sun, being ever in unison with Almighty Providence and the glorius dawn, grasp the fine particles of the materials offered and diffuse them far and wide.

(देवेन सवित्रा) प्रकाशक सर्वोत्पादक के साथ (सजूः०) तुल्य प्रीति से सम्मिलित होते हुए (इन्द्रवत्या उषसा सजूः) ऐश्वर्यवान् प्रातःकाल के साथ मिलते हुए (जुषाणः सूर्यो वेतु) प्रीतिपूर्वक वर्तमान सूर्य प्राप्त हो। एतदर्थ तदाज्ञापालनस्वरूप यह आहुति है।

अब नीचे लिखे हुए मन्त्र सायंकाल में अग्निहोत्र के जानो—

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥१॥
ओम् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥२॥
ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥३॥

इस मन्त्र को मन में उच्चारण करके तीसरी आहुति दें—

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजू रात्र्येन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ॥४॥

इन मन्त्रों का अर्थ पूर्ववत् ही है। केवल अग्नि शब्द का अर्थ ज्ञानस्वरूप प्राप्तियोग्य और रात्रि शब्द का अर्थ अन्धकार, सायंकाल रात है।

अब इन मन्त्रों से दोनों समय आहुति देवें—

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय—इदन्न मम ॥१॥

ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय—इदन्न मम ॥२॥

ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय—इदन्न मम ॥३॥

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा। इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः—इदन्न मम ॥४॥

(प्राणाय) जीवनप्रद के लिए। (वायवे) बलवान् के लिए। (अपानाय) दुःख नाशक के लिए। (आदित्याय) अविनाशी के लिए। (व्यानाय) सुखस्वरूप के लिए (अग्नये) प्रकाशस्वरूप के लिए॥

EVENING OBLATIONS

Om agnirjyotir jyotir agnih svaahaa.
Om agnirvarcho jyotir varchah svaahaa.
[Recite next mantra only in your mind]
Om agnirjyotir jyotir agnih svaahaa.
Om sajoordayvayna savitraa sajoo raatriyendra vatyaa. Jushano agnirvaytu svaahaa.

Truly, The Lord supreme, Who is the guide, promoter of the righteous and most reverable, is the supreme light and resplendent like the lustrous thermic force in the world. May this thermic force, being ever in unison with the Almighty, accept the fine particles of the materials offered and difffuse them far and wide.

MORNING AND EVENING OBLATIONS

Om bhooragnayay praanaaya svaahaa. Idam agnayay idanna mum.
Om bhoorvaayavay apaanaaya svaahaa. Idam vaayavay apaanaaya idanna mum.
Om svaraadityaaya vyaanaaya svaahaa. Idam aadityaaya vyaanaaya idanna mum.
Om bhoorbhuvah svaragni vaayvaa dityaybhyah praanaapaan vyaanaybhyah svaahaa. Idam agni vaayvaa dityaybhyah praanaapaan vyaanaybhyah idanna mum.

I am offering these oblations for the Lord Supreme, Who is dearer to me than my life itself, Who keeps His devotees away from all evils and sufferings, who is all bliss and bestower of bliss on His devotees, who is all knowledge, Dynamic, Imperishable and Eternal. I make these offers wishing to keep fire, air and sun agreeable and for health of respiratory organs of all living beings. Whatever I offer is for them only and nothing for myself.

ओं आपोज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ॥५॥

(आपः ज्योतिः रसः अमृतम्) सर्वव्यापक प्रकाशमान सार रूप अमर। (ब्रह्म, भूर्भुवः स्वः) सब से बड़ा सच्चिदानन्द (ओ३म) ओं संज्ञक है। (स्वाहा) उसी के आदेशस्वरूप आहुति हैं।

ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥६॥

(अग्ने) हे ज्ञानस्वरूप। (यां मेधां देवगणाः) जिस बुद्धि का, देव समूह। (च पितरः उपासते) और पितृगण सेवन करते हैं अर्थात् चाहते हैं। (तया मेधया अद्य माम् मेधाविनम् कुरु) उस बुद्धि से आज मुझको बुद्धियुक्त करो।

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रं तन्न आ सुव स्वाहा ॥७॥

हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता समग्र ऐश्वर्य युक्त परमेश्वर! हमारे सम्पूर्ण दुःखों को दूर कीजिये। जो कल्याणकारक पदार्थ हैं उन्हें दूर न कीजिये।

ओम् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा ॥८॥

हे प्रकाशस्वरूप ईश्वर आप हमको ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए अच्छे मार्ग से ले चलें। आप समस्त हमारे कर्मों के जानने वाले हैं, हमें उल्टे मार्ग रूप पाप से बचावें, इसीलिये हे प्रभु! हम बारम्बार आपको नमस्कार करते हैं।

Om aapo jyoti raso amritam brahma bhoorbhuvah svarom svaahaa.

Oh Lord God Almighty, vouchsafe that we may fully realize that You are All pervading, the light of all souls, all bliss, immortal, the Great Supreme being, the cause of the existence of the whole universe, the sanctifier of Your devotees, the bestower of all happiness upon the righteous and the Protector of all.

Om yaam maydhaam devaganaah pitarashch upaasatay. Tayaa maamadya medhayaagnay medhaavinam kuru svaahaa.

Oh Self effulgent Omnicient God! Grant me that superior discriminating intellect which enlightened and protectors possess. This is my hearty prayer to Thee.

Om vishvaani dayva savitar duritaani paraasuva yadabhadram tanna aa suva svaahaa.

Oh Lord God Almighty! creator of universe, and dispenser of true and eternal happiness, we beseach You to dispel all our miseries, vices and evil propensities, and to bestow upon us what is blessed and good.

Om agnay na ya supathaa raayay asmaan vishvaani dayva vayunaani vidwaan. Yuyodhyas majjuhuraana mayno bhooyishthaan tay nama uktim vidhayma svaahaa.

Oh Self Effulgent, Omnicient Lord, cast out from us all debasing and sinful desires and habits and lead us, by the path of righteousness, to attainment of all true knowledge and worldly riches. For this we offer unto You profound obeisance and praise.

26

मन्त्रपाठ

ओं पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

ओं सर्वं वै पूर्णꣳ स्वाहा ।

यज्ञ-प्रार्थना

पूजनीय प्रभो ! हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए ।
छोड़ देवें छल-कपट को, मानसिक बल दीजिए ॥
वेद की गायें ऋचाएँ, सत्य को धारण करें ।
हर्ष में हों मग्न सारे, शोकसागर से तरें ॥
अश्वमेधादिक रचाएँ यज्ञ पर-उपकार को ।
धर्म-मर्यादा चला कर, लाभ दें संसार को ॥
नित्य श्रद्धा-भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें ।
रोग-पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें ॥
भावना मिट जाए मन से पाप अत्याचार की ।
कामनाएँ पूर्ण होवें यज्ञ से नर-नारि की ॥
लाभकारी हो हवन हर जीवधारी के लिए ।
वायुजल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किए ॥
स्वार्थ-भाव मिटे हमारा प्रेम-पथ विस्तार हो ।
'इदन्न मम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो ॥
प्रेम रस में मग्न होकर वन्दना हम कर रहे ।
नाथ करुणारूप करुणा आपकी सब पर रहे ॥

26

POORNA AAHUTI

[The following mantra should be recited three times offering one oblation each time.]

Om sarvam vayee poorna gvang svaahaa.

Oh God, the world created by You is perfect. You in yourself are absolutely perfect. We may follow your directions. By Your grace the whole of this yajna has been concluded with perfection.

Yajna Geet

Poojneeya prabho! hamaaray, bhaava ujjwala keejiyay,
Chhod dayavain chhala kapata ko, maansik bala deejiyay.
Vayd kee gaayain richaayain, satya ko dhaaran karain,
Harsha main hon magna saaray, shoka saagar say tarain.
Ashva maydhaadik rachaayain, yajna para upkaar ko,
Dharma maryaadaa chalaa kar, laabh dain sansaar ko.
Nitya shraddhaa bhakti say, yajnaadi saba kartay rahain,
Rog peedit vishva kay, santaap saba hartay rahain.
Bhaavnaa mit jaayay mana say, paapa atyaachaar kee,
Kaamnaayain poorna hovain, yajna say nara naar kee.
Laabhakaari hon havana, hara praanadhaari kay liyay,
Vaayu jala sarvatra hon, shubh gandha ko dhaarana kiyay.
Swaartha bhaava mitay hamaaraa, praym path vistaar ho,
Idannamum kaa saarthaka, pratyayk main vyavhaara ho.
Praym rasa main magna ho kar, vandanaa hum kar rahay,
Naatha karunaa roop! karunaa, aap kee saba para rahay.

* ऋग्वेद का अन्तिम सूक्त *

सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ ।
इडस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ॥१॥
हे प्रभो तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को ।
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिये धन वृष्टि को ॥१॥

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे स जानाना उपासते ॥२॥
प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो ।
पूर्वजों की भांति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो ॥२॥

समानो मन्त्रः समितिः समानी, समानं मनः सह चित्तमेषाम् ।
समानं मंत्रमभि मंत्रये वः, समानेन वो हविषा जुहोमि ॥३॥
हों विचार समान सबके चित्त मन सब एक हों ।
ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब नेक हों ॥३॥

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥४॥
हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा ।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़ें सुख सम्पदा ॥४॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ॥५॥
सबका भला करो भगवान्, सब पर दया करो भगवान् ।
सब पर कृपा करो भगवान्,सबका सब विधि हो कल्याण ॥
हे ईश सब सुखी हों कोई न हो दुखारी ।
सब हों नीरोग भगवन् धनधान्य के भण्डारी ॥
सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों ।
दुखिया न कोई होवे सृष्टि में प्राणधारी ॥

शान्ति पाठ

ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म
शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।
ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

Prayer

Sarvay bhavantu sukhinah
Sarvay santu niraamayaah,
Sarvay bhadraani pashyantu
Maa kashchid dhukha bhaaga bhavayt.

May one and all be happy and in comfort!
May one and all be happy and in good health!
May one and all do well and be happy!
May one and all be blissfully free from anxiety, want and suffering!

I know not by what methods rare
But this I know-God answers prayer
I know not when He sends the word
That tells us fervent prayer is heard
I know it cometh soon or late
Therefore we need to pray and wait
I know not if the blessing sought
Will come in just the way I thought
I leave my prayers with Him alone
Whose will is wiser than my own.

-Anonymous

Oh God, our Father, we ask Your blessings upon us as we struggle day by day with problems of human existence. There is always an answer. It may not be the answer we want, but it is the right answer when it is Your answer. Thank You for this day and all Your blessings. Help us to count them one by one. Help us to send the power of faith straight through our difficulties to the bright possibilities that are inherent in them. We pray for those who are sick, troubled, sad, or lonely. And we ask You to draw near to our friends who ask Your peace. Lay the touch of Your quietness upon us and grant us Your peace. This we ask our Lord.